IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत सरकार के बजटीय व्ययों में वृद्धि के कारण एवं प्रभाव का अध्ययन

(वैगनर के बढती हुयी राजकीय व्ययों का सिद्धान्त के विशेष संदर्भ में)

भीम कुशवाहा

शोधछात्र, श्री गणेश राय पी0जी0 कालेज

डोभी जौनपुर(सम्बधःपूर्वाचल वि0वि0 जौनपुर)

Abstract

वर्तमान समय में बजट वित्तीय प्रशासन का महत्वपूर्ण अस्त्र है। बजट के माध्यम से सरकारे अपना आय एवं व्यय करती है। आधुनिक समय में चाहे कोई भी देश हो या कोई भी अर्थव्यवस्था, उसके व्ययों में लगातार वृद्धि हो रही है इस वृद्धि के बहुत से कारण है। क्योकि आधुनिक सरकारों के कार्यो की संख्या में बहुत ही वृद्धि हो गयी है साथ ही आधुनिक सरकारे कल्याण कारी सरकारों के नाम से भी जानी जा रही। प्रचीन समय में सरकारों का मुख्य कार्य देश की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा एवं न्याय व्यवस्था तक सीमित था जबकि आधुनिक सरकारों के कार्यो में परम्परा गत कार्यो के अतिरिक्त नवीन कार्यो जैसे–शिक्षा, स्वास्थ्य, साफ सफाई, जल प्रबन्धन, सामाजिक कल्याण, गरीवी उन्मूलन, रोजगार सृजन, जीवन स्तर को उपर उठाना, आर्थिक विकास, राजनैतिक विकास आदि कार्य करने पड़ते है जिससे उनके व्ययों में भी वृद्धि हो रही है। वैगनर ने अपने नियम में स्पष्ट किया है कि–''विभिन्न देशों और विभिन्न समयों की विशद् तुलना, यह स्पष्ट करती है कि सभी स्तर की सरकारो(केन्द्रीय एवं राज्य सरकारे) की क्रियाओं में विस्तृत तथा गहन दोनों प्रकार में वृद्धि होने की प्रवृति निहित होती है'' । वर्तमान समय में देखा जाय तो भारत सरकार के पिछले एवं दशक में व्ययो में ढई गुना से ज्यादा की वृद्धि हुई है जबकि औसत वार्षिक वृद्धि दर लग–भग 11 प्रतिशत से अधिक कि रही है वही सकल घरेलू उत्पाद में औसत वार्षिक वृद्धि दर 5 प्रतिशत से अधिक रही है जो वैगरनर के नियमों का समर्थन करने के लिए प्रर्याप्त है।

प्रस्तावनाः–

भारत में बजट का इतिहास बहुत ही पुराना है। प्राचीन समय में बजट का कार्य–क्षेत्र बहुत ही सीमित था उस समय बजट का प्रयोग जनता से कर वसूलने एवं उस कर राशि को सैन्य क्षमता बढ़ाने और सरकार की सीमाओं की रक्षा के लिए किया जाता था, जनता के कल्याण से बजट का कोई विशेष सम्बन्ध नही होता था। कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में बजट व्यवस्था का जिक्र किया है और लिखा है कि राजा की सत्ता उसके राजकोष की मजबूती पर निर्भर करती है। राजस्व और कर राजा के लिए आमदनी है, जो उसे अपनी प्रजा की सेवा, सुरक्षा और कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए मिलती है।

आर्थिक बजट वह धुरी है जिसके चारों ओर राज्य की समस्त आर्थिक गतिविधियाँ चक्कर लगाती है। वित्तीय प्रशासन जिस प्रकार आधुनिक सरकारों का हिद्य है, उसी प्रकार बजट वित्तीय प्रशासन का हिद्य है। वित्तीय प्रशासन की सम्पूर्ण अवधारणा बजट के आस–पास घूमती है; दूसरे शब्दो में बजट के माध्यम से ही वित्तीय प्रशासन अपने उद्देश्यों को पूरा करता है। सरकार जो कुछ भी करती है बजट के मध्यम से करती है। बजट द्वारा साधन एवं सध्यो के मध्य संतुलन स्थापित किया जाता है, जिससे समाज की आकांक्षाओं को प्राप्त किया जा सके। बजट किसी देश की आर्थिक स्थिति का दर्पण होता है। बजट एक ऐसा आधार है जिसके बिना देश की सामाजिक तथा राजनीतिक उन्नति सम्भव नही है। किसी देश की आर्थिक प्रगति का सही–सही मूल्यांकन देश की बजट नीति एवं गजट के अधार को देख कर किया जा सकता है[1]।

किसी देश के बजट मे उस देश की अर्थिक नीति की झलक दिखयाी देती है। देश की बजट–नीति से देश में वस्तुओं व सेवाओं की माँग प्रभावित होती है। बजटों पर देश का रोजगार व आय–स्तर, यहाँ तक कि उपभोग–स्तर भी निर्भर करता है[2]। सरकार बजट का उपयोग इस प्रकार करती है कि आर्थिक केन्द्रीयकरण को रोक कर संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण किया जाय; साथ ही सरकार को देश के विकास के लिए उचित आर्थिक नीति का निर्माण कर उसका क्रियान्वयन करना होता है। अतः बजट सरकार के नियोजन के लिए एक उपकरण है। औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने, रोजगार के अवसर सृजित करने, मुद्रास्फीति को काबू में रखने, व्यापर चक्र को नियन्त्रित करने, आय एवं व्यय के बीच उचित संतुलन रखने के लिए सरकार को बजट का उपयोग अत्यंत सावधानी और सर्तकता पूर्वक करना पड़ता है।

बजट मे अगर बढ़ते व्यय को, व्यय सिद्धान्तो के अनुसार मजबूती से पालन करते हुए लागू किया जाय तो यह देश एवं देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव डालता है। अधिक उत्पादन, धन का अधिक समान वितरण, पिछडे क्षेत्रों का अच्छी प्रकार से विकास, रोजगार का सृजन ये सभी अच्छी तरह से बजट व्यय के मध्यम से किया जा सकता है। इसीलिए बजट में बजट व्यय को बहुत ही सोच बिचार कर किया जाता है।

वैगनर का बढ़ती हुयी राजकीय क्रियाओं(व्ययों)का सिद्धान्त

प्रसिद्ध जर्मन अर्थशास्त्री एडोल्फ वैगनर द्वारा प्रतिपादित 'राज्य के कार्यो में वृद्धि के नियम' को वैगनर का नियम कहा जाता है। वैगनर ने अपने नियम में स्पष्ट किया है कि–''विभिन्न देशों और विभिन्न समयों की विशद् तुलना, यह स्पष्ट करती है कि सभी स्तर की सरकारो(केन्द्रीय एवं राज्य सरकारे) की क्रियाओं में विस्तृत तथा गहन दोनों प्रकार में वृद्धि होने की प्रवृति निहित होती है'' इसके परिणाम स्वरूप सरकारी व्ययो में वृद्धि होती है। वैगनर के सिद्धान्त का समर्थन करते हुये एफ0एस0 निट्टी ने निष्कर्ष निकाला कि–''सभी प्रकार की सरकारों के सार्वजनिक व्ययोंमें वृद्धि की प्रवृति निहित है, चाहे वह केन्द्रीय सरकार हो या राज्य सरकार, शान्ति काल हो य युद्धकाल, छोटी सरकारे हो या बड़ी सरकारे''[3]

वैगनर के अनुसार अपनी गतिविधियों में बढोत्तरी करना हर सरकार की आतंरिक प्रवृति होती है। कालांतर में विभिन्न कारणों से राज्य की गतिविधियों में फैलाव के साथ–साथ उसकी गहनता भी बढ़ती

है। राज्य की गतिविधियों का अर्थव्यवस्था के विकास के साथ इस प्रकार कार्यात्मक सम्बन्ध होता है कि राज्य गतिविधियों के विकास की दर अर्थव्यवस्था के विकास की दर से सदैव अधिक बनी रहती है।[4]

भारत सरकार के बजटीय व्यय

संसार के सभी देशों मे सरकारी व्यय में अधिक एवं लगातार वृद्धि हो रही है। वैसे तो 19वी शताब्दी मे ही यह प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होने लगी थी, परन्तु 20वी शताब्दी में यह बिल्कुल स्पष्ट एवं निश्चित हो गयी[5]। हम सभी जानते है की भारत एक संघीय देश है, संघीय सरकार के गतिविधियों मे विस्तार होने से व्यय में भी लगातार वृद्धि हो रही है; वर्तमान समय मे सरकारें एक कल्याणकारी सरकार बन गयी है जो अपने नागरिकों के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कल्याण को बढ़ावा देती है, यही कारण है कि सरकारें आर्थिक विकास के स्तर को बढाने, रोजगार के स्तर को बढ़ाने, व्यापार के स्तर को बढ़ाने, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, सामाजिक सुरक्षा, कृषि, सिचाई, विद्युत एवं अन्य विकास कार्यक्रमों पर अधिक खर्च कर रही है।

वर्तमान समय में भारत सरकार के कार्य क्षेत्र एवं जनसंख्या में भारी वृद्धि हो रही है; क्षेत्र एवं जनसंख्या बढ़ने से सरकार की जिम्मेदारी में भी वृद्धि हो रही है हर जगह बढ़े हुए कार्य एवं जनसंख्या के लिए सुरक्षा, न्याय, शिक्षा, जीवन यापन के साधन आदि पर सरकार के खर्च बढते जा रहे है। जनसंख्या परिर्वतन बजटीय वृद्धि का एक प्रमुख निर्धारक है, जनसंख्या वृद्धि की दरो में परिर्वतन से आयु वितरण में परिर्वतन होता है जो बच्चों के विकास, बुढ़ो की देख भाल, रहने के लिए घर की सुविधा, परिवहन, खेल के मैदान, मनोरंजन की सुविधा, संचार के साधनों का विकास, अधिक से अधिक निर्माण कार्य, जल आपूर्ति, विद्युत आपुर्ति एवं अन्य सार्वजनिक गतिविधियों के कारण सरकार के बजटीय आकार में वृद्धि होता है जिससे सरकार के व्यय में भी वृद्धि होता है। भारत सरकार के व्ययों में वृद्धि को निम्न तालिका द्वारा दिखाया गया है।

भारत सरकार के बजटीय व्यय 2012–13 से 2021–22 (कुल व्यय करोड़ रूपये में)

वित्तीय वर्ष	कुल–व्यय	वार्षिक वृद्धि दर के रूप में
2012–13 वास्त.	1410372	
2013–14 वास्त.	1559447	10.56
2014–15 वास्त.	1663673	6.68
2015–16 वास्त.	1790783	7.64
2016–17 वास्त.	1975194	10.29
2017–18 वास्त.	2141973	8.44
2018–19 वास्त.	2315113	8.08
2019–20 वास्त.	2686330	16.03
2020–21 संसोधित अनुमान	3450305	28.43
2021–22 बजट अनुमान	3483236	0.95

(स्तोत्र–2012–13 से 2021–22 तक के भारत सरकार के बजट दस्तावेज–'बजट सार,)

भरत सरकार के बजटीय व्यय तालिका से स्पष्ट है की वित्तीय वर्ष 2012–13 का वास्तविक व्यय ₹1410372 करोड़ है जो वित्तीय वर्ष 2021–22 के बजट अनुमान में बढ़ कर 3483236 करोड़ हो गया है। इस प्रकार हम देखते है कि वित्तीय वर्ष 2012–13 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2021–22 में लग–भग ढ़ाई गुने से की वृद्धि हुई है। अगर बजटीय व्यय की वार्षिक वृद्धि की तुलना की जाय तो इसमें अधिक उतार चढ़ाव दिखाई देता है वित्तीय वर्ष 2013–14 में वार्षिक वृद्धि दर 10.56 प्रतिशत था जो बजट अनुमान 2021–20 में 0.95 प्रतिशत रह गया है। लेकिन इन उतार चढ़ाव को औसत रूप में देखा जाय ता वार्षिक वृद्धि का औसत 10.78 या लग–भग 11 प्रतिशत के बराबर है।

तालिका में दिये गये व्ययो का प्रभाव देखा जाय तो देश में सामाजिक संरचना, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, उद्योग एवं व्यापार, रक्षा, आर्थिक विकास आदि पर सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

सतत मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद

सतत मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद 2012–13 से 2020–21(कुल व्यय करोड़ रूपये में)

वित्तीय वर्ष	स.घ.उ.	वार्षिक वृद्धि दर के रूप में
2012–13	9213017	
2013–14	9801137	6.38
2014–15	10527674	7.41
2015–16	11369494	7.99
2016–17	12308193	8.25
2017–18 द्वितीय संसोधित अनुमान	13175160	7.04
2018–19 प्रथम संसोधित अनुमान	13981426	6.11
2019–20 अंतिम अनुमान	14565951	7.18
2020–21 प्रथम अग्रिम अनुमान	13439662	-7.73

(स्तोत्र–आर्थिक समीक्षा 2020–21 सांख्यिकीय परिशिष्ट पेज.नं. ए18)

सतत मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद की तलिका से स्पष्ट होता है कि 2012–13 में सकल घरेलू उत्पाद ₹9213017 करोंड़ था जो 2020–21 के प्रथम अग्रिम अनुमान में बढ़कर ₹13439662 करोड.हो गया है। यदि वार्षिक वृद्धि को दखा जाय तो एक दो प्रतिशत अन्तर के साथ प्रतिवर्ष घट बढ़ रहा है वही वार्षिक वृद्धि की औसत दर लग–भग 5.32 प्रतिशत है

भारत में लोक व्यय में वृद्धि के कारण

हमारे देश के लोक व्यय की प्रकृति एवं आकार का निर्धारण राजनीतिक दशा, प्रशासन प्रणाली, आर्थिक विकास, आर्थिक नीति, सामाजिक कल्याण, विदेशी व्यापार, आदि तत्वो पर निर्भर करता है। लोक व्यय में वृद्धि के कारणों को निम्न बिन्दुओं द्वारा दिखाया जा सकता है–

1–देश की जनसंख्या में वृद्धि एव तेजी से नगरीकरण का विस्ता 2–देश का तीव्र आर्थिक विकास एवं आर्थिक नियोजन 3–सामाजिक एवं सामुदायिक सेवाओं का विस्तार 4–प्रशासनिक एवं न्यायीक व्ययो में वृद्धि 5–आन्तरिक एवे वाह्य ऋण सेवा भार में वृद्धि 6–देश के आन्तरिक एवं वाह्य प्रतिरक्षा व्यय मे भारी वृद्धि 7–लोकतंत्रीय शासन प्रणाली 8–मुद्र के मूल्य स्तर में लगातार गिरावट की प्रवृति 9–सब्सिडी के व्ययो में तीव्र वृद्धि 10–विकास के लिए भारी उपक्रमो की स्थापना आदि।

भारत में वैगनर का सिद्धान्त लागू होने के कारण

भरत में वैगनर का सिद्धान्त लागू होने के बहुत से कारण है उनमें से कुछ कारण निम्नवत है–

- भारत सरकार के परम्परा गत एवं नवीन कार्यो में बहुत जटिलता है जिसके कारण सरकार के व्ययो में तेजी से वृद्धि हो रही है। परम्परा गत कार्यो मे जहाँ आन्तरिक एवं वाह्य सुरक्षा, न्याय व्यवस्था को सम्मिलित किया जाता है वही नवीक कार्यो में मानव विकास, स्वाथ्य, शिक्ष, आर्थिक विकास आदि को सम्मिलित किया जाता है। समय के साथ इन सभी कार्यो के क्षेत्रो में विस्तार हुआ है एवं साथ ही इनको पूरा करने की जटिलता भी बढ़ी है। इन दोनो ही दृष्टियों से कुशलता पूर्वक कार्य करने के लिए सार्वजनिक व्ययो मे वृद्धि हो रही है।

- भारत सरकार के व्ययो में वृद्धि विस्तृत कारणों से भी हो रही है अर्थात वर्तमान में भारत सरकार कल्याणकारी एवं आर्थिक क्रियाओं के संचालन का भी कार्य कर रही है। उदाहरण स्वरूप, विभिन्न प्रकार कि पेन्सन योजना, मनरेगा आदि।
- भारत सरकार द्वारा गरीब एवं निर्धन व्यक्तियों के जीवन पोषण के लिए बहुत सी बस्तुओं एवं सेवाओं को उपलब्ध कराती है(सार्वजनिक वितरण प्रणाली) जिससे सार्वजनिक वस्तुओं के व्ययों में लगातार वृद्धि हो रही है। जो सरकार की गति विधि एवं व्यय दोनों को बढ़ा रहा है।
- वर्तमान समय में सरकार के लिए जनसंख्या वृद्धि एवं बड़ी समस्या है। जनसंख्या में लगातार वृद्धि के साथ सरकार की सामान्य सेवाओं जैसे–शिक्षा, स्वास्थ्य, एवं साफ सफाई आदि में बढ़ोत्तरी होना स्वभाविक है। हमारे देश की जनसंख्या में शहरीकरण की प्रवृति में काफी वृद्धि हुयी है साथ ही नये नगर भी अस्तित्व में आ रहे है जिससे नगरो में मकान, जल प्रबन्धन, यातायात प्रबन्धन, आदि कार्यो पर सरकार को बहुत ज्यादा व्यय करना पड़ रहा है।
- भरत सरकार के व्ययों में वृद्धि का एक प्रमुख कारण कीमतों में लगातार वृद्धि भी रही है। कीमतो में वृद्धि के कारण वेतन भत्ते में वृद्धि होती है साथ ही वस्तुओ एवं सेवाओं को अधिक दाम में खरीदना भी पड़ता है।
- भारत सरकार के व्ययो में वृद्धि का कारण, भारत सरकार के ऋणो में लगातार वृद्धि होना भी रहा है जिसमें आन्तरिक एवं बाह्य दोनो प्रकार के ऋण सम्मिलित है। जब ऋणों का भूगतान किया जाता है तो उसमें मूलधन के साथ बड़ी मात्रा में ब्याज का भी भूगतान किया जाता है।

भारत सरकार के लोक व्यय में निहित खतरे एवं सावधानियाँ

भारत सरकार के लोक व्यय में निहित खरते एवं सावधानियाँ को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है–

- भारत सरकार के व्यय का अधिकांश भाग अपव्यय एवं अनुत्पादक रहा है। हम सभी जानते है कि भारत सरकार के व्यय में बहुत ही अधिक भ्रष्टाचार पाया गया है जिसके रोकथाम के लिए सरकार ने बहुत से कदम उठाये है जिसमें ऑन लाइन पेमेन्ट प्रमुख है। भारत सरकार जो व्यय करती है उसके अधिकांश भाग अनुत्पादक होते है जैसे पेन्सन व्यय, गरीब कल्याण, सब्सिडी आदि इन व्ययो का अर्थव्यस्था पर वुरा प्रभाव पड़ता है लेकिन सरकार का पक्ष है कि इन व्ययो से गरीबों का जीवन स्तर उपर उठता है जो सरकार का मुख्य लक्ष्य है।
- भारत मे लोक व्यय बढ़ने के प्रमुख कारणों में राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति भी रहा है। सत्ता रूढ़ राजनीतिक दल अपनी महत्वकाक्षां को पूर्ण करने के लिए बहुत से कार्यक्रमों की घोषणा एवं लागू करते है जिससे लोक व्यय में वृद्धि होना स्वभाविक हो जाता है। सरकारों कों कार्यक्रमों को लागू करते समय जनकल्याण के दृष्टिकोण से कार्य करना चाहिए जिससे सभी समाज एव वर्ग को लाभ मिल सके।
- भारत सरकार के लोक व्यय में वृद्धि होने से जहाँ जनता पर कर–भार का दबाव बढ़ा है वही इन व्ययों को पूर्ति न हो पाने से घाटे की वित्त व्यवस्था के कारण मुद्रा–स्फीति की स्थिति भी उत्पन्न होने लगी है। यह ठीक है कि भारत सरकार के लोक व्यय में वृद्धि होने से कर–भार

में वृद्धि होती है, लेकिन यह प्रक्रिया इस प्रकार बनायी गयी है कि जनता के कुल कल्याण में वृद्धि हो तो काई कठिनाई नही है।

निष्कर्ष—लोक व्यय में वृद्धि होने के वैगनर के सिद्धान्त की सत्यता के अधिकाशं अंश भारत में परिलक्षित होते है। आज भारत के बजटीय व्ययों मे जाहाँ बहुत बड़ी मात्रा में वृद्धि हई है वही इसके कार्य क्षेत्र का भी व्यापक विस्तार हुआ है। शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष निकल कर सामने आया है कि सरकार के बजटीय व्यय में जाहाँ वित्तीय वर्ष 2012—13 से 2021—22 तक, वृद्धि की औसत दर प्रतिवर्ष लग—भग 11 प्रतिशत रही है वही सकल घरेलू के विकास की प्रतिवर्ष औसत दर इस अवधि में 5 प्रतिशत के आस पास रही है। भारत में लोक व्यय के वृद्धि के प्रमुख करणों में देश की अन्तरिक एवं वाह्य सुरक्षा, जनहितकारी कार्यक्रम, सब्सिडी, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेन्सन, जनसंख्या वृद्धि आदि प्रमुख रही है। वर्तमान समय में लोक व्यय उस सीमा तक उचित समझा जाता है जहां तक वह समाज को आधिकत्तम सामाजिक लाभा प्रदान करने मे सक्षम हों।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः—

1—डॉ0 जे0सी0 वार्ष्णेयन—'लोक वित्त' पेज.नं. 479 एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा

2—डॉ0 जे0सी0 पन्त—'राजस्व' पेज.नं. 442 एकादशम संस्करण लक्ष्मी नारयण अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा

3—डॉ0 के0एल0 गुप्ता—'राजस्व' पेज.नं.72 साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा(2013)

4—डॉ0 एच0एल0 भाटिया—'लोक वित्त' पेज.नं. 188 विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि. नई दिल्ली110014

5—के0के0एण्डले एवं के0पीएम0 सुन्दरम—'लोक अर्थशास्त एवं लोक वित्त' पंचम संस्करण पेज न066 रतन प्रकाश मंदिर आगरा